उत्सव गीत

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

उत्सव-गीत

[उत्सवों के सम्बन्ध में बाल-गीत]

लेखक

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

प्रकाशक

चाँद कार्यालय

४२, ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद २११००१

उत्सव-गीत

© विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

द्वितीय संस्करण १९८५

•

मूल्य : पाँच रुपये

मुद्रक :

यू० पी० प्रिंटिंग प्रेस

४२, तांशकंद मार्ग.

इलाहाबाद–२११००१

दो शब्द

राष्ट्रीय एवं धार्मिक उत्सवों के अवसर पर बालकों का प्रसन्न होना स्वाभाविक है। विभिन्न त्योहारों के सम्बन्ध में बालोपयोगी कविताएँ उत्सव-गीत में संकलित हैं। बच्चे इन्हें महत्त्वपूर्ण पर्वों के अवसर पर गा सकते हैं। विश्वास है कि रचना बालकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

—कवि

विषय-सूची

१. नव वर्ष
२. साथी नया वर्ष है आया
३. वीर सुभाष
४. छब्बीस जनवरी
५. बसंत
६. होली
७. तुलसी जयंती
८. स्वतंत्रता दिवस
९. मुक्ति पर्व
१०. हिन्दी दिवस
११. दो अक्टूबर
१२. गांधी जयन्ती
१३. विजय का पर्व
१४. दीवाली
१५. बाल दिवस
१६. बच्चों का त्योहार

नव-वर्ष

आया नव वर्ष बधाई है।

बीती देखो पिछली घड़ियाँ।
छूटतीं हर्ष की फुलझड़ियाँ॥
आनन्द मनाते लोग सभी,

सब ओर खुशी ही छाई है।
आया नव वर्ष बधाई है॥

अब सूर्य नया, दिन-रात नये ।
मंगलमय मधुर प्रभात नये ।।
वन-उपवन में बह रही हवा,

सन्देश नया सा लाई है ।
आया नव वर्ष बधाई है ।।

साथी नया वर्ष है आया

साथी ! नया वर्ष है आया ।

नयी किरण उतरी धरती पर,
उगा पूर्व में नया सवेरा ।
चमक उठा जग का हर कोना,
विगत वर्ष का मिटा अँधेरा ।।

आसमान में नये साल का,
नया बाल सूरज मुस्काया ।
साथी ! नया वर्ष है आया ।।

नये फूल, नव कलियां पाकर,
झूमी गुंच में डाली डाली ।
कोयल काली कुहू-कुहू कर,
तान छेड़ती गयी निराली ।।

तितली ने भी वन-उपवन में,
अपना नया नाच दिखलाया ।
साथी ! नया वर्ष है आया ।।

अब तो नयी रात आयेगी,
लिए नया सा चन्दा मामा ।
दिखलाई देगी सपनों में,
नई-नई परियाँ अभिरामा ।।

नये सितारे देख गगन में,
पुलकित होगी सबकी काया ।
साथी ! नया वर्ष है आया ।।

आओ, आपस में मिल हम सब,
बीती घड़ियों को बिसरायें ।
नया साल सबको सुखमय हो,
यही हृदय से आज मनायें ।।

नव उमंग उत्साह नया ले,
कदम रखें आगे मनभाया ।
साथी ! नया वर्ष है आया ।।

वीर सुभाष

जय नेताजी वीर सुभाष ।

गोरों का लख अत्याचार ।
तुमको चिन्ता हुई अपार ।।
बन्धन चले तोड़ने माँ का,

जगा अडिग मन में विश्वास ।
जय नेताजी वीर सुभाष ।।

सब कुछ दिया देश-हित त्याग ।
सुलगायी जन-जन में आग ।।
सहते रहे बहुत से कष्ट,

किया सहर्ष जेल में वास ।
जय नेताजी वीर सुभाष ।।

बना हिन्द सेना आजाद ।
नभ में गुँजा दिया जयनाद ।।
चले निडर दिल्ली की ओर,

करने परवशता का नाश ।
जय नेताजी वीर सुभाष ।।

तुम सा पा साहसी सपूत ।
स्वतन्त्रता का अनुपम दूत ।।
भारतमाता करती गर्व,

फैल रही सब ओर सुवास ।
जय नेताजी वीर सुभाष ।।

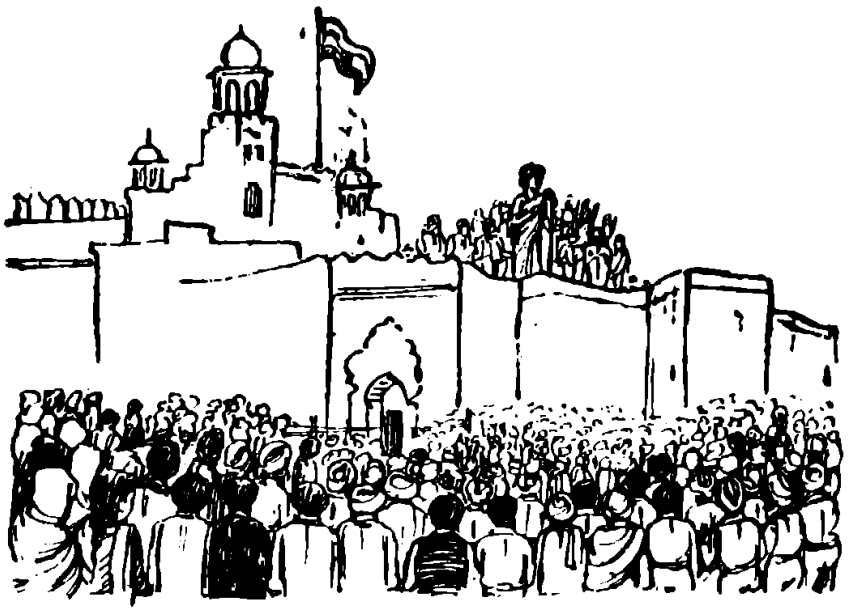

छब्बीस जनवरी

छब्बीस जनवरी आई है ।

यह तिथि सब तिथियों से बढ़कर,
भारत-माता को प्यारी है ।
इसकी महिमा, इसकी गरिमा,
सारे दिवसों से न्यारी है ।।

निज देशवासियों ने खुलकर
इसकी गुण-गाथा गाई है ।
छब्बीस जनवरी आई है ।।

रावी-तट पर नेहरू जी ने,
इस दिन जयघोष सुनाया था ।
सम्पूर्ण स्वराज्य लक्ष्य अपना,
यह सबको ही बतलाया था ।।

इस ध्येय-पूर्ति के लिए हुई
निशिदिन घनघोर लड़ाई है ।
छब्बीस जनवरी आई है ।।

कितने लोगों ने इसके हित,
तन-मन-धन-जीवन दान किया ।
हँस-हँस करके बलिवेदी पर,
न्योछावर अपना प्राण किया ।।

उनके ही त्याग और तप से
उन्मुक्ति देश ने पाई है ।
छब्बीस जनवरी आई है ।।

स्वाधीन राष्ट्र ने इस दिन से,
नव संविधान अपनाया है ।
उत्तम गणतन्त्र प्रणाली का,
जग को आदर्श दिखाया है ।।

इससे स्वदेश की सभी ओर,
दुनिया में हुई बड़ाई है ।
छब्बीस जनवरी आई है ।।

उल्लास, हर्ष का सिन्धु आज,
जन-गण-मन में लहराया है ।
उत्साह असीम, अनन्त ओज,
सबके हृदयों में छाया है ।।

राष्ट्रीय ध्वजा भी अम्बर से,
सब ओर गयी फहराई है।
छब्बीस जनवरी आई है।।

निकला सबके ही कण्ठों से,
इस अवसर पर यह नारा है।
भारत के वासी एक सभी,
एक ही देश यह सारा है।।

सबने एकता-प्रतिज्ञा मिल,
ऊँचे स्वर से दुहराई है।
छब्बीस जनवरी आई है।।

हम लोग मनायें पुण्य-पर्व,
आनन्द-मोद में ही झूलें।
जो हुए शहीद जन्म-भूहित,
उनको न कभी भी हम भूलें।।

उनसे ही लें प्रेरणा सदा,
हो सकती तभी भलाई है।
छब्बीस जनवरी आई है।।

गणतन्त्र पर्व यह अमर रहे,
कामना करें सब नर-नारी।
नित फूले फले विकास करे,
अपनी यह मातृभूमि सारी।।

उन्नति करता ही रहे देश,
सबकी बस यही बधाई है।
छब्बीस जनवरी आई है।

बसन्त

आया सुन्दर सुखमय बसन्त ।

कलियाँ खिलकर बन गईं फूल ।
डालों पर भौरें रहे झूल ।

हँस रहा प्रकृति का आदि अन्त ।
आया सुन्दर सुखमय बसन्त ।।

बह रही मनोरम मधुर वात ।
हो मस्त झूमता पात-पात ।।

महकता सुरभि से दिग् दिगन्त ।
आया सुन्दर सुखमय बसन्त ।।

कोकिला सुनाती सरस राग ।
बज रही ढोल, हो रहा फाग ।।

पुलकित जल-थल-अम्बर अनन्त ।
आया सुन्दर सुखमय बसन्त ।।

होली

आ गया होली का त्योहार ।

सुनाया कोयल ने सन्देश,
बजाई भौरों ने भी बीन ।
कर रही स्वागत बहकर हवा,
छेड़ती चिड़िया तान नवीन ।।

नाचती तितली पंख पसार ।
आ गया होली का त्योहार ।।

प्रकृति ने भी क्या खेला फाग,
भर दिया फूलों में नव रंग ।
कर दिया सूरज का मुँह लाल,
उषा ने लेकर नयी उमंग ।।

हो रही रंगों की बौछार ।
आ गया होली का त्योहार ।।

छा रही मस्ती चारों ओर,
नाचते सब दे दे कर ताल ।
बड़ी मौजों की आज बहार,
थिरकते पाँव, थिरकती चाल ।।

हो रहा खुश सारा संसार ।
आ गया होली का त्योहार ।।

बज रहे झाँझ, मृदंग मंजीर,
छिड़ा फागुन का मधुमय गान ।
सभी में आ जाता उत्साह,
ढोल की जब सुन पड़ती तान ।।

अज्ञान, अधर्म, अनय का ही,

छाया जब भू पर अन्धकार ।

ले राम नाम का दिव्य दीप,

तुमने दिखलाया चमत्कार ।।

आबाल, वृद्ध, नारी, नर को,

है दिया तुम्हों ने दिव्य ज्ञान ।

पढ़ 'रामचरित मानस' का सब,

करते हैं अब भी सुधापान ।।

हिन्दी भाषा तुमको पाकर,

हो गयो धन्य कितनी निहाल ।

अपनी कृतियों से भारत का,

कर दिया विश्व में उच्च भाल ।।

स्वतन्त्रता दिवस

स्वतन्त्रता का दिवस हर्ष से,
हम सब आज मनायें ।

मिली देश को मुक्ति इसी दिन,
एक नया युग आया ।
उठीं उमंगे हृदय हृदय में,
सबमें मोद समाया ।।

पुण्य पर्व पर पुलकित होकर,
गीत विजय के गायें ।
स्वतन्त्रता का दिवस हर्ष से,
हम सब आज मनायें ।।

प्राणों से भी बढ़कर हमको,
यह दिन लगता प्यारा ।
दे सर्वस्व बचाना इसको,
है कर्तव्य हमारा ।।

जो भी इसे छीनना चाहे,
उसको मार भगायें ।
स्वतंत्रता का दिवस हर्ष से,
हम सब आज मनायें ।।

आगे ही हम बढ़ें निरन्तर,
चाह यही हो मन में ।
भारत को विकसित करने का,
भाव भरें जन-जन में ।।

सुन्दर स्वर्ग समान सर्वथा,
अपना देश बनायें ।
स्वतन्त्रता का दिवस हर्ष से,
हम सब आज मनायें ।।

मुक्ति-पर्व

हम स्वदेश के लिए जियेंगे, हम स्वदेश के लिए मरेंगें ।

स्वतंत्रता-देवी की रक्षा,
प्रथम धर्म अपना मानेंगे ।
भारत माता की लज्जा को,
प्राणों से बढ़कर जानेंगे ।।

मातृ भूमि की बलिवेदी पर, अर्पित तन-मन सभी करेंगे ।
हम स्वदेश के लिए जियेंगे, हम स्वदेश के लिए मरेंगे ।।

अपनी सीमाओं के भीतर,
कोई शत्रु न आने देंगे ।
जिसने आगे कदम बढ़ाया,
जीवित उसे न जाने देंगे ।।

चाहे सारा जग विरुद्ध हो, नहीं किसी से कभी डरेंगे ।
हम स्वदेश के लिए जियेंगे, हम स्वदेश के लिए मरेंगे ।।

अंग-अंग कट जाय भले ही,
अंतिम दम तक लड़ जाएंगे।
मान रखेंगे राष्ट्र ध्वजा का,
जननी को जय-जय गायेंगे।।

पड़े देश पर कोई संकट, पलभर में ही उसे हरेंगे।
हम स्वदेश के लिए जियेंगे, हम स्वदेश के लिए मरेंगे।।

अंगारे हों बिछे पन्थ पर,
आगे ही हम सदा बढ़ेंगे।
स्वाभिमान पर अड़े रहेंगे,
देश प्रेम का पाठ पढ़ेंगे।।

जन-जन में उत्साह, ओज, उल्लास गर्व का भाव भरेंगे।
हम स्वदेश के लिए जियेंगे, हम स्वदेश के लिए मरेंगे।।

हिन्दी दिवस

सब भाषाएँ हमको प्यारी, हिन्दी सबसे प्यारी है

बंगला मलयालम, पंजाबी,
तेलगू, कन्नड़, गुजराती।
उड़िया, तामिल और मराठी,
उर्दू भी हमको भाती॥

अलग-अलग सबका महत्व है, हिन्दी फिर भी न्यारी है।
सब भाषाएँ हमको प्यारी, हिन्दी सबसे प्यारी है॥

सूरदास, तुलसी, कबीर ने,
इसका रूप संवारा है।
मीरा ने इसकी सेवा में,
सारा जीवन बारा है॥

भारतेन्दु, मैथिली शरण की भी, यह राजदुलारी है।
सब भाषाएँ हमको प्यारी, हिन्दी सबसे प्यारी है॥

कोटि-कोटि कण्ठों की वाणी,
गाँव-गाँव की बोली है।
भारत माता के मस्तक पर,
शोभित बनकर रोली है॥

प्रेम भाव से शीश नवाती, इसको जनता सारी है।
सब भाषाएँ हमको प्यारी, हिन्दी सबसे प्यारी है॥

हो समृद्ध भाषा यह अपनी,
यत्न हमें कुछ करना है।
शब्द और साहित्य कोश को,
अपने श्रम से भरना है॥

करें विकास निरन्तर इसका इच्छा यही हमारी है।
सब भाषाएँ हमको प्यारी, हिन्दी सबसे प्यारी है॥

इसका करें प्रचार विश्व में,
द्वेषभाव हम सब त्यागें।
बँधे एकता के बन्धन में,
छोड़ विवाद उठें जागें॥

बने विश्व की भाषा हिन्दी, यह विचार हितकारी है।
सब भाषाएँ हमको प्यारी, हिन्दी सबसे प्यारी है॥

दो अक्टूबर

बापू ! तुमको कोटि प्रणाम ।

तुमने किया हमें स्वाधीन ।
भरा सभी में, भाव नवीन ।।
दिखलाया स्वदेश से प्रेम,

त्याग दिया सब कुछ धन धाम ।
बापू ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

बने शान्ति के पावन दूत।
भारत माँ के अमर सपूत ।।
सत्य-अहिंसा के ही पोषक,

मानवता की मूर्ति ललाम।
बापू ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

सबको माना एक समान।
किया हरिजनों का सम्मान ।।
ऊँच नीच में भेद न देख,

की सबकी सेवा अविराम।
बापू ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

हम सब चलें तुम्हारी राह।
यही एक है मन में चाह ।।
तुम्हें न सकता कोई भूल,

अमर रहेगा युग युग नाम।
बापू ! तुमको कोटि प्रणाम ।।

गांधी जयन्ती

आ गयी गांधी जयन्ती,
हम सभी उत्सव मनायें ।

आज अपना ले हृदय से,
गुण सभी, हम सब, तुम्हारे ।
जो तुम्हें आदर्श प्रिय थे,
हों हमें वे परम प्यारे ।।

देश को इस पुण्य तिथि पर,
फूल श्रद्धा के चढ़ायें ।
आ गयी गाँधी जयन्ती,
हम सभी उत्सव मनायें ।।

प्रेम से जीतें जगत को,
विश्व को परिवार मानें ।
हम अहिंसा-सत्य को ही,
एक अपना ध्येय जानें ।।

चरण चिह्नों पर तुम्हारे,
हम चलें, जग को चलायें ।
आ गयी गाँधी जयन्ती,
हम सभी उत्सव मनायें ।।

जो मिली स्वाधीनता तुमसे,
उसे जाने न देंगे ।
हम किसी भी शत्रु को,
निज भूमि में आने न देंगे ।।

मुक्त कण्ठों से बही प्रण,
अखिल वसुधा को सुनायें ।
आ गयी गाँधी जयन्ती,
हम सभी उत्सव मनायें ।।

विजय का पर्व

विजय का पर्व आया है।

निशाचर जल मरे सारे।
स्वयं ही पाप के मारे।
हुए मुनि-देवता पुलकित,

हृदय में हर्ष छाया है।
विजय का पर्व आया है॥

सुयश सब राम का गाते।
उन्हें जय-माल पहनाते।
धरा ने आज वन्दन में,

सुखद उत्सव मनाया है।
विजय का पर्व आया है॥

अनय से न्याय जीता है।
मिली फिर आज सीता है।
मिटा अभिमान रावण का,

उसे सबने जलाया है।
विजय का पर्व आया है॥

दीवाली

आई है जगमग दीवाली ।

सजी आज दीपों की माला ।
बिखरा नया प्रकाश निराला ।।
फैल गयी शोभा सुखकारी ।
लगी चमकने धरती सारी ।।

सभी ओर छाई उजियाली ।
आई है जगमग दीवाली ।।

दूर हुआ घनघोर अँधेरा ।
विहँस उठा ज्यों सुखद सबेरा ।।
उतरे भू पर मानो तारे ।
दीपक सबको लगते प्यारे ।।

कितनी सुन्दर रजनी काली ।
आई है जगमग दीवाली ।।

जन-मन में उल्लास समाया ।
नया हर्ष सबने है पाया ।।
खुश हैं बाल, वृद्ध, नर-नारी ।
छुड़ा रहे फुलझड़ियाँ प्यारी ।।

नाच रहे बच्चे दे तालो ।
आई है जगमग दीवाली ।।

बाल दिवस

बालकों का आया त्योहार ।

रहे हम सभी खुशी से झूम ।
मचाते घूम घूम कर धूम ।।
नाचते, गाते, हँसते खूब,

भर गयी हममें खुशी अपार ।
बालकों का आया त्योहार ।।

हृदय में छाया नव-उत्साह ।
हो रही नव-उन्नति की चाह ।।
बढ़ें आगे जीवन में सदा,

यही कहता कर्तव्य पुकार ।
बालकों का आया त्योहार ।।

दे रहा बाल-दिवस सन्देश ।
बनायें हम महान निज देश ।।
रखें ऊँचा उत्तम आदर्श,

करें सारी दुनिया से प्यार ।
बालकों का आया त्योहार ।।

निभायें सेवा धर्म पुनीत ।
सुनायें राष्ट्र प्रेम के गीत ।।
जलायें जीवन की नव ज्योति,

बना दें सुखमय यह संसार ।
बालकों का आया त्योहार ।।

बच्चोंका त्योहार

आ गया बच्चों का त्योहार।
सभी में छाई नई उमंग।
खुशी की उठने लगी तरंग॥
हो रहे हम आनन्द विभोर,

समाया मन में हर्ष अपार।
आ गया बच्चों का त्योहार ।।

करें चाचा नेहरू को याद।
जिन्होंने किया देश आजाद ।।
बढ़ाया हम सबका सम्मान,

शान्ति की देकर नई पुकार।
आ गया बच्चों का त्योहार ।।

चलें उनके ही पथ पर आज।
बनायें स्वर्ग समान समाज ।।
न मानें कभी किसी से बैर,

बढ़ायें आपस में हम प्यार।
आ गया बच्चों का त्योहार ।।

देश-हित दें सब कुछ हो त्याग।
करें भारत-माँ से अनुराग ।।
बनायें जन-सेवा को ध्येय,

करें दुखियों का हम उद्धार।
आ गया बच्चों का त्योहार ।।